بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-09.06.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर के युद्ध तथा विभिन्न आरम्भिक परिस्थितियों एवं युद्धों तथा अभियानों के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन परिचय एवं ऐतिहासिक घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हजरत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 9 जून 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हिजरत के बाद की आरम्भिक परस्थितियाँ, युद्ध के कारण, मक्का के काफ़िरों की गतिविधियों तथा उनकी योजनाओं को रोकने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो काररवाई फ़रमाई उसका कुछ वर्णन हुआ था। बदर की लड़ाई से पहले कुछ अन्य युद्ध तथा युद्ध क अभियान भी हुए तथा मक्का के काफ़िरों के साथ युद्ध के लिए तय्यारी के कुछ हालात भी बयान करूँगा, इन्शाअल्लाह।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमज़ान एक हिजरी में पहला युद्ध अभियान हज़रत हमज़ा के नेतृत्व में भेजा जिसे सैफ़ुलबहर भी कहते हैं। झंडा सफ़ेद था, अबू मर्सद रज़ी. झंडा वाहक थे और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने चाचा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ी. को उसका अमीर बनाया, तीस महाजिर सवार उनके साथ थे। ऐस नामक स्थान पर अबू जहल के नेतृत्व में शाम देश से आने वाले एक दल से उनका सामना हुआ। दोनों पक्ष आमने सामने आए परन्तु बनू सुलीम क़बीले के एक रईस ने बीच बचाव करा दिया तथा दोनों पक्ष वापस चले गए।

फिर उबैदा बिन हारिस नामक युद्ध अभियान है। शव्वाल एक हिजरी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ी. को साठ महाजिरों का दस्ता देकर सनीय्यतुल मरा की ओर भेजा जहाँ अबू सुफ़यान तथा उसक दो सौ सवारों से आमना सामना हुआ। दोनों ओर से कुछ तीर चलाए गए किन्तु नियमबद्ध लड़ाई नहीं हुई। इससे पहले मुसलमानां तथा काफ़िरों क बीच कभी तीर नहीं चलाए गए थे। मुसलमानों की ओर से हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. ने पहला तीर चलाया जो इस्लाम के इतिहास का पहला तीर था और जिस पर हज़र सअद रज़ी. को न्यायोचित रूप से गर्व था। फिर पक्षकार वापस अपने अपने क्षत्रों में चले गए।

फिर हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. वाला युद्ध अभियान, एक अथवा दो हिजरी में हुआ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश के एक व्यापारिक दल को रोकने के लिए हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. को बीस आदमियों का अमीर बनाकर रवाना किया तथा आदेश दिया कि ख़रार नामक घाटी से आगे न जाएँ परन्तु जब ये ख़रार पहुंचे तो वह दल उनके पहुंचने से पहले ही निकल गया था अतः ये बिना किसी मुठभेड़ के वापस आ गए।

फिर वद्दान नामक युद्ध सिफ़र के महीने दो हिजरी का है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साठ सत्तर मुहाजिरों के साथ वद्दान की ओर गए। इतिहासकार इब्ने सअद के अनुसार यह पहला युद्ध है जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं शामिल हुए। आप स. ने हज़रत सअद बिन अबादा रज़ी. को मदीने में अपना नायब नियुक्त किया। आप स. का इरादा क़ुरैश के व्यापारिक दल को रोकना था किन्तु वह आप स. के पहुंचने से पहले ही निकल चुका था। आप स. ने बनू ज़मरा के सरदार मख़शी बिन उमरू के साथ मित्रता का समझौता किया जिसके अनुसार दोनों पक्ष एक दूसरे पर हमला नहीं करेंगे और न ही किसी पक्ष के शत्रु का साथ देंगे। इस यात्रा में आप स. पन्द्रह दिन मदीने से बाहर रहे।

बवात नामक युद्ध रबीउल अव्वल दो हिजरी में हुआ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. को मदीने का अमीर नियुक्त किया तथा अपने दो सहाबियों के साथ क़ुरैश के यात्री दल को रोकने के लिए निकले। इस दल में उमय्या बिन ख़लफ़ के अतिरिक्त एक सौ अन्य क़ुरैशी तथा दो हज़ार पाँच सौ ऊँट थे। बवात पहुंचने पर आप स. का किसी से सामना नहीं हुआ और आप स. वापस मदीना लौट आए। झंडे का रंग सफ़ेद था जिसे हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. ने उठा रखा था।

उशीरा नामक युद्ध- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूचना मिली कि क़ुरैश का एक व्यापारिक दल मक्का से निकला है तथा मक्का वालों ने उसमें अपना पूरा व्यपारिक धन लगा दिया था ताकि जो लाभ मिले वह मुसलमानों के विरुद्ध लड़ने में उपयोग हो। अतः आप स. जमदिल उला अथवा जमादिस्सानिया 2 हिजरी में डेढ़ दो सौ लोगों के साथ यात्रा के निश्चय से निकले। जब आप स. उशीरा पहुंचे तो पता चला कि वह दल कुछ दिन पूर्व ही जा चुका है। आप स. कुछ दिन ठहरे तथा बनू बदलज और बनू ज़मरा के सहयोगियों से मित्रता का समझौता किया एवं मदीना वापस आ गए। क़ुरैश का यह वही दल था जिसके शाम देश से वापस आने पर आप स. दोबारा उसका पीछा करते हुए निकले तथा बदर के युद्ध का मामला पेश आया।

बदर ऊला का युद्ध- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब उशीरा नामक युद्ध से वापस आए तो दस दिन भी व्यतीत न हुए थे कि कुर्ज़ बिन जाबिर ने मदीने की चरागाह पर हमला कर दिया। आप स. उसका पीछा करते हुए निकले और हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ी. को अपना अमीर नियुक्त किया। आप स. सफ़वान नामक घाटी में पहुंचे परन्तु कुर्ज़ बिन जाबिर तेज़ी से आगे निकल गया और आप स. उसे न पा सके, अतः आप स. मदीना वापस आ गए। इसे बदर ऊला इस लिए कहते हैं क्यूँकि बदर में एक ओर सफ़वान नामक स्थान तक मुसलमानों की सेना पहुंची थी।

कुर्ज़ बिन जाबिर के विषय में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने जो विस्तार लिखा है, वे कहते हैं कि कुर्ज़ बिन जाबिर का यह हमला एक बद्दुओं वाली हलकी विनाशकारी घटना नहीं थी बल्कि निःसन्देह

वह क़ुरैश की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध विशेष योजना लेकर आया था, बल्कि सम्भव है कि उसका निश्चय विशेषतः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हानि पहुंचाने का हो, परन्तु मुसलमानों को सावधान पाकर उनके ऊँटों पर हाथ साफ़ करता हुआ निकल गया। इससे यह भी ज्ञात होता है कि मक्का के क़ुरैशियों ने यह इरादा कर लिया था कि मदीने पर छापे मार मार कर मुसलमानों को नष्ट एवं असफल किया जावे। यह भी याद रखना चाहिए कि यद्यपि इससे पहले मुसलमानों को तलवार के साथ लड़ने की अनुमति हो चुकी थी तथा उन्होंने बचाव की दृष्टि से इसके सम्बंध में आरम्भिक कारवाई भी शुरु कर दी थी परन्तु अभी तक उनकी ओर से काफ़िरों को किसी प्रकार के जान माल की हानि नहीं पहुंची थी परन्तु कुर्ज़ बिन जाबिर के हमले से मुसलमानों को वास्तविक रूप से हानि हुई थी। मानो मुसलमानों की ओर से क़ैरश की चुनौती स्वीकार कर लिए जाने के बाद भी युद्ध शुरु करने में काफ़िरों की ओर से ही पहल रही।

अब्दुल्लाह बिन हजश नामक युद्ध अभियान मक्का के निकट एक घाटी में हुआ। इसके बारे में लिखा है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रजब के महीने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. को आठ मुहाजिरों के साथ रवाना किया। हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. और हज़रत उतबा बिन ग़ज़वान रज़ी. का ऊँट गुम हो गया जिसको खोजने के कारण वे पीछे रह गए तथा अन्य शेष लोग नख़ला पहुंच गए। वहाँ मक्का के क़ुरैशियों ने मुसलमानों को देखा तो भयभीत हो गए। युद्ध के लिए अवैध महीने रजब का अन्तिम दिन था। मुसलमानों ने विचार किया कि यदि इनको छोड़ दिया तो ये हाथ से निकल जाएँगे इस लिए क़ुरैश पर हमला कर दिया तथा उनके एक रईस उमरू बिन हज़रमी को मार दिया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. दो बन्दियों तथा ऊँटों को लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मदीना उपस्थित हो गए। आप स. ने फ़रमाया कि मैंने तुम्हें यह आदेश नहीं दिया था कि तुम अवैध महीनों में युद्ध करो तथा कोई चीज़ भी क़बूल करने से इंकार कर दिया। अल्लाह तआला ने अवैध महीने में इस हमले के लिए मुसलमानों को संतोष एवं क्षमा के लिए सूरः बक़रा की आयत 218 वह्यी के रूप में नाज़िल की। इससे जहाँ मुसलमानों की संतुष्टि हुई वहाँ क़ुरैश भी कुछ ठंडे पड़ गए क्यूँकि उन्हें पला लग गया कि वह्यी हुई है, तत्पश्चात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. तथा हज़रत उतबा बिन ग़ज़वान के सुरक्षित वापस आने पर क़ुरैश के दोनों बन्दियों को फ़िदया लेकर छोड़ दिया।

अल-कुबरा बदर के युद्ध को क़ुर्आन करीम में यौमुल फ़ुर्क़ान घोषित किया गया है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़ुर्क़ान बदर की लड़ाई वाला दिन था, जिस दिन कि विरोधियों के शक्ति शाली गिरोह नष्ट हुए तथा मुसलमानों को विजय एवं ग़ल्बः प्राप्त हुआ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. एक अन्य स्थान पर शब्द फ़ुर्क़ान का अर्थ बयान करते हुए फ़रमाते हैं- क़ुर्आन से मुझे इसका यह अर्थ ज्ञात हुआ है कि फ़ुरक़ान नाम है उस विजय का जिसके बाद दुशमन की कमर टूट जाए और यह बदर का दिन था।

इस युद्ध को बदरे सानियः, बदरे कुबरा, बदरुल उज़्मा और बदरुल क़िताल भी कहा जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूचना मिली कि अबू सुफ़यान क़ुरैश का एक दल लेकर वापस आ रहा है जिसमें एक हज़ार ऊँट हैं तथा उसमें क़ुरैश का धन अधिक मात्रा में लगा हुआ था। तीस चालीस

अथवा सत्तर आदमी थे। यह वही दल था जिसका पीछा करते हुए आप स. पहले भी निकले थे। इस अभियान के लिए आप स. जमादिल ऊला अथवा जमादिल आख़िर दो हिजरी को रवाना हुए। कुछ कम ज्ञान रखने वाले लोग आरोप लगाते हैं कि मुसलमानों ने लूट मार के लिए युद्ध किया था लेकिन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. में बयान करते हैं कि इस दल की रोक थाम के लिए निकलना कदाचित आपत्ति जनक नहीं था क्यूँकि यह एक बड़ा व्यापारिक दल था तथा इसका लाभ मुसलमानों के विरुद्ध उपयोग किया जाना था। अतएव इतिहास से प्रमाणित है कि इसका लाभ ओहद के युद्ध की तय्यारी में ख़र्च किया गया। अतः इसकी रोकथाम युद्ध की योजना का आवश्यक भाग थो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस दल के विषय में खोजबीन के लिए हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ी. और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ी. को आगे रवाना किया। अबू सुफ़यान को सूचना मिली कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबियों के साथ उसके दल पर हमला करने के लिए रवाना हो चुके हैं, यह सूचना सुनकर वह अत्यधिक भयभीत हुआ तथा अपने एक सन्देश वाहक को मक्का जाकर यह यह ख़बर देने को कहा और स्वयं अबू सुफ़यान बदर नामक स्थान को एक ओर छोड़ कर तेज़ी से आगे बढ़ गया।

इसके विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी आतका सुपुत्री अब्दुल मुत्तलिब का एक अद्भुत सपना है जो बाद में सच्चा साबित हुआ। उन्होंने अबू सुफ़यान के सन्देश वाहक के मक्का पहुंचने से तीन रात पहले सपने में देखा कि एक व्यक्ति ऊँट पर सवार अलबतह नामक मैदान में, फिर कअबे की छत पर तथा फिर अबुल ख़बीस पहाड़ की चोटी पर खड़ा होकर ऊँची आवाज़ से लोगों को अपने अपने हत्या-गृह में तीन दिन के अन्दर अन्दर पहुंचने के लिए कहता है। फिर उसने एक पत्थर उस पहाड़ से नीचे लुढ़का दिया तथा नीचे पहुंचते ही वह पत्थर टुकड़े टुकड़े हो गया और मक्के के घरों में से कोई घर तथा कोई मकान ऐसा शेष न रहा जिसमें उस पत्थर का एक टुकड़ा न गया हो। उन्होंने यह सपना अपने भाई हज़रत अब्बास बिन मुत्तलिब को बताया जो इसके बाद फैलते फैलते अबू जहल तक पहुंच गया। अबू जहल ने कहा कि हम तीन दिनों तक प्रतीक्षा करते हैं यदि इसी तरह हुआ तो ठीक है अन्यथा हम एक लेख पत्र कअबे में लटका देंगे कि तुम अरब में सबसे अधिक झूठे हो। तत्पश्चात हज़रत अब्बास बिन मुत्तलिब रज़ी. की महिलाओं के कहने पर अबू जहल को मारने के लिए ख़ाना कअबे में गए परन्तु उनका ध्यान अबू सुफ़यान के उस सन्देश वाहक की भयावह अवस्था की ओर केंद्रित हो गया जिसे मक्के वालों को मुसलमानों के हमले से सावधान करने के उद्देश्य भिजवाया गया था तथा जो हर एक स्थान पर अबू सुफ़यान के क़ाफ़ले को बचाने के लिए घोषणा कर रहा था। क़ुरैश तो पहले ही युद्ध का बहाना तलाश कर रहे थे इस घोषणा पर उनको मनचाहा बहाना मिल गया तथा व यद्ध को पऱो तय्यारो करन लग। ह़ज़र-ए-अनवर न फरमाया कि इसका आर अधिक विवरण इन्शाअल्लाह आग बयान हागा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔